# नये नियम में पुरानी व्यवस्था

## ओवन ऑल्ब्रट

*''पर उसको उसकी सेवकाई से बढ़कर मिली, क्योंकि वह और भी उत्तम वाचा का मध्यस्थ ठहरा, जो और उत्तम प्रतिज्ञाओं के सहारे बान्धी गई है। क्योंकि यदि वह पहली वाचा निर्दोष होती, तो दूसरी के लिए अवसर न ढूंढ़ा जाता। पर वह उन पर दोष लगाकर कहता है, कि प्रभु कहता है, देखो, वे दिन आते हैं, कि मैं इस्राएल के घराने के साथ, यहूदा के घराने के साथ, नई वाचा बान्धूंगा। यह उस वाचा के समान न होगी, जो मैंने उनके बाप-दादों के साथ उस समय बान्धी थी, जब मैं उनका हाथ पकड़कर उन्हें मिसर देश में निकाल लाया'' (इब्रानियों 8:6-9क)।*

क्या आज पुरानी और नई दोनों ही वाचाएं अर्थात मूसा की व्यवस्था और मसीह की व्यवस्था एक साथ लागू हो सकती हैं ? बहुत से लोग सिखाते हैं कि पुरानी वाचा के रूप में ''परमेश्वर की व्यवस्था'' तो आज भी लागू है, परन्तु ''मूसा की व्यवस्था'' (विधियां, नियम, बलिदान के नियम, और किसी भी दूसरी तरह के उपदेश जिन्हें वे ''परमेश्वर की व्यवस्था'' में शामिल नहीं मानते) आज लागू नहीं हैं। ये लोग इस्राएल को दिए गए खतना, नैतिक नियमों, और खाने पीने के नियमों सम्बन्धी मूसा की कुछ आज्ञाओं को मानते हैं, परन्तु दूसरी आज्ञाओं को नकार देते हैं।

हमें चाहिए कि परमेश्वर की शिक्षा को सही ढंग से सिखाएं। ''अपने आप को परमेश्वर का ग्रहणयोग्य और ऐसा काम करने वाला ठहराने का प्रयत्न कर, जो लज्जित होने न पाए, और जो सत्य के वचन को ठीक रीति से काम में लाता हो'' (2 तीमुथियुस 2:15)।

### यीशु और व्यवस्था

क्या व्यवस्था और भविष्यवक्ताओं की पुस्तकों में पाई जाने वाली आज्ञाएं आज भी लागू हैं ? यीशु की बात का अर्थ यह सिखाने के लिए निकाला जाता है कि वे पृथ्वी के रहने तक प्रभावी रहेंगी। ''यह न समझो कि मैं व्यवस्था या भविष्यवक्ताओं की पुस्तकों को लोप करने आया हूं। लोप करने नहीं, परन्तु पूरा करने आया हूं। क्योंकि मैं तुमसे सच कहता हूं, कि जब तक आकाश और पृथ्वी टल न जाएं, तब तक व्यवस्था से एक मात्रा या एक बिन्दु

भी बिना पूरा हुए नहीं टलेगा'' (मत्ती 5:17, 18)।

इस पद में कई महत्वपूर्ण बातें मिलती हैं: (1) यीशु के आने का उद्देश्य व्यवस्था या भविष्यवक्ताओं को मिटाना नहीं था। (2) बल्कि वह उन्हें पूरा करने आया था। (3) यीशु न केवल व्यवस्था की ही बल्कि भविष्यवक्ताओं के वचनों की भी बात कर रहा था। (4) जब तक परमेश्वर द्वारा दी गई सभी भविष्यवाणियां पूरी नहीं हो जातीं तब तक आकाश और पृथ्वी टल नहीं सकते। (5) यीशु ने इस बात की पुष्टि की कि उससे जुड़ी हर एक भविष्यवाणी पूरी होगी। (6) पूरी होने पर भविष्यवाणियां टल जाती हैं (अर्थात, उन्हें दोबारा पूरा होने की आवश्यकता नहीं)।

यीशु यह नहीं कह रहा था कि (1) व्यवस्था तथा भविष्यवक्ताओं की आज्ञाएं आकाश और पृथ्वी के टलने तक रहेंगी या (2) वह उन्हें पूर्ण अर्थ देने के लिए आया है (यह विचार कुछ अनुवादों में पाया जाता है[1])।

यीशु की बातों की इससे मिलती-जुलती भविष्यवाणियों पर ध्यान दें:

> लोप करने नहीं, परन्तु पूरा करने आया हूं (मत्ती 5:18क)।
>
> क्योंकि, मैं धर्मियों को नहीं परन्तु पापियों को बुलाने आया हूं (मत्ती 9:13ख)।
>
> मैं मिलाप कराने को नहीं, पर तलवार चलाने आया हूं (मत्ती 10:34ख)।
>
> मैं जगत को दोषी ठहराने के लिए नहीं, परन्तु जगत का उद्धार करने के लिए आया हूं (यूहन्ना 12:47ख)।

यीशु धर्मियों तथा पापियों के लिए (मत्ती 28:19), शान्ति दिलाने (यूहन्ना 14:27) और न्याय करने (यूहन्ना 5:22) आया। इन वाक्यों में एक यूनानी वाक्य का इस्तेमाल है जिसका अर्थ है ''A,B के जितना नहीं'' पर यह नहीं कि ''A बिल्कुल नहीं, बल्कि विशेष तौर पर B.'' प्रत्येक वाक्य के भाग A में ''केवल'' या ''मात्र'' शामिल किया जा सकता है, जिससे इन पदों में यूनानी भाषा का मुहावरा बन जाए: ''केवल धर्मियों को ही नहीं, बल्कि पापियों को भी बुलाने आया''; ''केवल न्याय करने ही नहीं, बल्कि संसार को बचाने भी आया''; और ''व्यवस्था को मिटाने ही नहीं, बल्कि पूरा करने आया।''

इस उदाहरण पर विचार करें। किसी व्यक्ति ने दुकान से कुछ वस्तुएं खरीदीं। उसने उनके पैसे नहीं दिए, परन्तु एक समझौते पर हस्ताक्षर कर दिए कि वह दाम बाद में चुका देगा। यह खरीददार दो सप्ताह बाद फिर दुकान पर गया और उसके मालिक को फिर से यह आश्वासन दिया कि ''यह न सोचना कि मैं इस बिल को रद्द करने आया हूं; मैं इसे रद्द करने नहीं बल्कि पूरा करने आया हूं। क्योंकि साल के अन्त तक मैं बिल की पाई-पाई पैसा चुका कर इसकी शर्तों को पूरा कर दूंगा।''

इस स्थिति में कुछ बातें स्पष्ट होंगी: (1) ग्राहक ने बिल का भुगतान करने की योजना

बनाई थी । (2) उसने इसे वर्ष के समाप्त होने से पहले अदा करना था; वह अगले सप्ताह भी बिल का भुगतान कर सकता था। (3) एक बार भुगतान होने के बाद कागज तो रिकॉर्ड के लिए रह जाने थे कि ये वस्तुएं खरीदी गई थीं और उनका दाम चुका दिया गया है, परन्तु, वह समझौता अब प्रभावी नहीं रहना था। अन्त में, (4) बिल का भुगतान हो जाने पर शर्तें लागू नहीं रहनी थीं (अर्थात इसका भुगतान बार-बार करने की आवश्यकता नहीं थी)।

व्यवस्था और भविष्यवक्ताओं की पुस्तकों पर भी यही बात लागू होती है। यीशु उन्हें रद्द करने नहीं, बल्कि पूरा करने के लिए आया था। यदि वह उन्हें रद्द करने आया होता, तो उन्हें पूरा करने की आवश्यकता नहीं थी। जो कुछ व्यवस्था और भविष्यवक्ताओं की पुस्तकों में उसके बारे में लिखा गया था कि वह पूरा करेगा, उसने उसे पूरा किया। उसके द्वारा पूरा करने पर वे टल गईं। पूरा होने पर यदि वे न टलतीं, तो उसे बार-बार मरना और जी उठना पड़ता। अब इसकी ज़रूरत नहीं है, क्योंकि उसने सदा-सदा के लिए उन्हें एक ही बार पूरा कर दिया है (लूका 24:44; 1 कुरिन्थियों 15:3, 4; इब्रानियों 10:11, 12)।

अनुवादित शब्द ''पूरा करना'' यूनानी भाषा के शब्द *pleroo* (प्लेरू) से लिया गया है, जिसका अर्थ है ''पूर्ण करना, भविष्यवाणी को पूरा करने के लिए, एक भविष्यवक्ता की कही बात को करना'' (मत्ती 1:22; 2:15, 17, 23); ''जिसकी आवश्यकता है उसे पूरा करना या समाप्त करना'' (मत्ती 3:15; मरकुस 1:15; लूका 7:1); ''भरना'' (मत्ती 13:48; 23:32; लूका 3:5)। कोई भी दूसरा संदर्भ जहां प्लेरू शब्द का इस्तेमाल किया जाता हो मत्ती 5:17 के अनुवाद को यह कहने के लिए सही नहीं ठहरा सकता कि यीशु व्यवस्था और भविष्यवक्ताओं को पूर्ण अर्थ देने के लिए आया था। इस पद में यीशु भविष्यवाणी तथा उस पूर्व छाया की बात कर रहा था जिसे वह पूरा करने आया था।

यदि इस पद की व्याख्या यह अर्थ निकालने के लिए की जाती है कि व्यवस्था समाप्त नहीं होगी, तो हमें यीशु और नये नियम के लेखकों के बीच निराशाजनक विरोधाभास मिलता है। कई पद पुष्टि करते हैं कि व्यवस्था और इस्राएल के साथ बांधी गई परमेश्वर की वाचा एक ओर कर दी गई है। यीशु ने भी संकेत दिया कि व्यवस्था में बदलाव होना था।

> उसने उनसे कहा; क्या तुम भी ऐसे ना समझ हो? क्या तुम नहीं समझते, कि जो वस्तु बाहर से मनुष्य के भीतर जाती है, वह उसे अशुद्ध नहीं कर सकती? क्योंकि वह उसके मन में नहीं, परन्तु पेट में जाती है, और संडास में निकल जाती है? यह कहकर उस ने सब भोजन वस्तुओं को शुद्ध ठहराया (मरकुस 7:18, 19)।

व्यवस्था में शुद्ध और अशुद्ध भोजन में अन्तर किया गया था। इसलिए, यीशु भोजन के नियमों को भी बदल रहा था (1 तीमुथियुस 4:3-5 भी देखिए)।

यीशु ने यह संकेत भी दिया था कि आराधना के स्थान से सम्बन्धित आज्ञा भी बदल जाएगी। यूहन्ना 4:21 में लिखा है, ''यीशु ने उस से कहा, हे नारी, मेरी बात की प्रतीति कर कि वह समय आया है कि तुम न तो इस पहाड़ पर पिता की आराधना करोगे और

न यरूशलेम में (ROV)।'' व्यवस्था के अनुसार, यहूदियों के लिए आराधना का स्थान उसी नगर, अर्थात यरूशलेम (1 राजा 11:13; प्रेरितों 8:27) में होना था जिसे परमेश्वर ने चुनना था (व्यवस्थाविवरण 12:5,11,14,18)। यीशु ने बताया कि यह विधि बदल जाएगी।

## पौलुस और व्यवस्था

पौलुस और बरनबास यरूशलेम में प्रेरितों व प्राचीनों से यह जानने के लिए मिले कि अन्यजातियों के खतने और मूसा की व्यवस्था को मानने की फरीसियों के गुट की शर्त सही थी (प्रेरितों 15:5ख)। अन्यजातियों के नाम लिखे इन अगुओं के पत्र में इस झगड़े के सम्बन्ध में लिखा गया कि उन्होंने इस प्रकार की कोई ''आज्ञा नहीं दी'' थी (प्रेरितों 15:24)। अन्यजातियों के लिए कुछ सीमित प्रतिबन्ध थे (प्रेरितों 15:29), परन्तु पत्र से स्पष्ट हो गया कि अन्यजातियों पर व्यवस्था लागू नहीं होगी।

पुराने नियम की आज्ञाओं की बात करते हुए, नये नियम में ''व्यवस्था'' इस्राएल को दी गई परमेश्वर की व्यवस्था को कहा जाता है। यीशु ने कहा कि यहूदियों ने मूसा की बातों को टालकर परमेश्वर की आज्ञाओं और उसके वचन को ठुकरा दिया था (मरकुस 7:8-13)। लूका ने भी बताया कि मूसा की व्यवस्था की बातें प्रभु की व्यवस्था ही थी (लूका 2:22-24)। याकूब की तरह (याकूब 2:10, 11) पौलुस ने भी इस्राएल को दी गई परमेश्वर की विभिन्न आज्ञाओं को ''व्यवस्था'' कहा था (रोमियों 2:20-23; 7:7; 13:8-10)। ''मूसा की व्यवस्था,'' ''यहोवा की व्यवस्था,'' और ''व्यवस्था'' सब एक ही अर्थात इस्राएलियों को दी गई परमेश्वर की व्यवस्था के लिए ही इस्तेमाल होते हैं (व्यवस्थाविवरण 4:7, 8)। इसी व्यवस्था को एक तरफ हटाकर इसके स्थान पर यीशु की व्यवस्था दे दी गई।

पौलुस ने यह संकेत देते हुए कि एक स्त्री तब तक अपने पति के साथ बंधी हुई है जब तक वह जीवित है, व्यवस्था की तुलना विवाह से की। इस तुलना में उसके निष्कर्ष पर विचार कीजिए: ''सो हे मेरे भाइयो, तुम भी मसीह की देह के द्वारा व्यवस्था के लिए मरे हुए बन गए, कि उस दूसरे के हो जाओ, जो मरे हुओं में से जी उठा: ताकि हम परमेश्वर के लिए फल लाएं'' (रोमियों 7:4)। पौलुस ने गलतियों 2:19 में भी विचार व्यक्त किया: ''मैं तो व्यवस्था के द्वारा व्यवस्था के लिए मर गया, कि परमेश्वर के लिए जीऊं।''

रोमियों 7:6 कहता है, ''परन्तु जिस के बन्धन में हम थे उसके लिए मर कर, अब व्यवस्था से ऐसे छूट गए, कि लेख की पुरानी रीति पर नहीं, बरन आत्मा की नई रीति पर सेवा करते हैं''। यीशु के द्वारा हम व्यवस्था के लिए मुर्दा हैं और इससे छुड़ाए गए हैं, जिसका अर्थ यह है कि हमारे ऊपर इसका अब कोई अधिकार नहीं है और इसे मानने की हम पर कोई ज़िम्मेदारी नहीं है।

यदि व्यवस्था पूरी तरह से मानी जाती, तो वह हमें धर्मी बना सकती थी। परन्तु, पाप के कारण यह किसी को धर्मी नहीं बना सकती (गलतियों 2:21; 3:21, 22)। विश्वास करने वालों के लिए, यीशु धर्म के लिए व्यवस्था का अन्त है (रोमियों 10:4)। इसका अर्थ यह होना चाहिए कि हमें विश्वास के द्वारा धर्मी बनाया जाता है, उस व्यवस्था को मानने से

नहीं जिसका ''अन्त'' यीशु है।

''अन्त'' शब्द *telos* से अनुवादित किया गया है जिसका अर्थ न केवल ''अन्त'' है (मत्ती 10:22; 24:6; लूका 1:33) बल्कि ''परम्परा'' (मत्ती 17:25; रोमियों 13:7), ''पूरा होना,'' ''फल'' या ''प्रतिफल'' (लूका 22:37; रोमियों 6:21, 22; याकूब 5:11), और ''सारांश'' (1 तीमुथियुस 1:5) भी है। रोमियों 10:4 के संदर्भ में, इसका मूल अर्थ *telos* ही रहता है जिसका अर्थ ''अन्त'' या ''समाप्ति'' है। 1 से 3 आयतों में, पौलुस ने यह तथ्य प्रस्तुत किया कि यहूदी लोग यीशु में विश्वास के द्वारा धर्मी ठहरने के बजाय अपने आप धर्मी बनने की इच्छा करते थे। यीशु का अनुयायी बनने से पहले, पौलुस भी व्यवस्था के द्वारा अपनी ही धार्मिकता की खोज में था; परन्तु जब वह यीशु से मिला तो उसे व्यवस्था के द्वारा धर्मी बनने की आवश्यकता नहीं रही (फिलिप्पियों 3:9)। यदि व्यवस्था के द्वारा धार्मिकता आ जाती, तो यीशु को मरने की आवश्यकता नहीं थी (गलतियों 2:21)। इसके विपरीत धार्मिकता के लिए यीशु व्यवस्था का अन्त है। यीशु में विश्वास करने वालों के लिए, व्यवस्था के द्वारा धार्मिकता की खोज समाप्त हो चुकी है क्योंकि यीशु ने धार्मिकता के साधन के रूप में व्यवस्था को निकाल दिया है।

गलतियों 3:19 में पौलुस ने प्रकट किया कि व्यवस्था कितनी देर तक रहनी थी: ''तब फिर व्यवस्था क्या रही? वह तो अपराधों के कारण बाद में दी गई, कि उस वंश के आने तक रहे, जिस को प्रतिज्ञा दी गई थी, और वह स्वर्गदूतों के द्वारा एक मध्यस्थ के हाथ ठहराई गई।'' पहले, उसने समझाया था कि वंश क्या है (गलतियों 3:16)। इस तथ्य का कि व्यवस्था लोगों को यीशु के आने तक रोके रखने के लिए दी गई थी, अर्थ है कि उसके आने से व्यवस्था का अन्त हो गया।

कुछ आयतों में आगे यही विचार बना रहता है:

> पर विश्वास के आने से पहिले व्यवस्था की आधीनता में हमारी रखवाली होती थी, और उस विश्वास के आने तक जो प्रगट होनेवाला था, हम उसी के बन्धन में रहे। इसलिए व्यवस्था मसीह तक पहुंचाने को हमारी शिक्षक हुई, कि हम विश्वास से धर्मी ठहरें। परन्तु जब विश्वास आ चुका, तो हम अब शिक्षक के आधीन न रहे (गलतियों 3:23-25)।

व्यवस्था विश्वास के द्वारा धार्मिकता नहीं दिला सकती थी; उल्टा, इसने धार्मिकता को रोक दिया था। व्यवस्था एक शिक्षक, अर्थात pedagogue [पैडागोग] (यू.: *paidagogos*) थी जिसका अर्थ मूलत:, बच्चे को सम्भालने वाली या बच्चे की सहायक था।

> पैडागोग धनी यूनानियों या रोमियों द्वारा परिवार के किसी बच्चे की जिम्मेदारी सम्भालने के लिए रखे गुलाम को कहा जाता था। उसे लगभग छह से सोलह वर्ष के बालक की देखभाल करनी होती थी और उसकी जिम्मेदारी होती थी कि उसके स्कूल से आने जाने या कहीं और जाने पर उसके व्यवहार पर नज़र रखे।[2]

पौलुस द्वारा की गई तुलना यह है कि जैसे ''बच्चे को सम्भालने वाले'' का बच्चे पर स्कूल में शिक्षक तक पहुंचाने तक अधिकार रहता था, वैसे ही व्यवस्था भी हमें यीशु तक लाने के लिए हमारी संरक्षक थी। यीशु के आने पर, जिसने उस पर विश्वास करने वालों के लिए उद्धार उपलब्ध करवाया है, व्यवस्था ने अपना उद्देश्य पूरा कर लिया है। अब जबकि यीशु आ चुका है और उसने वह उद्धार उपलब्ध करवा दिया है जो व्यवस्था नहीं करवा पाई थी तो हम संरक्षक अर्थात व्यवस्था के अधीन नहीं रहे (गलतियों 3:25)।

व्यवस्था यहूदियों को अन्यजातियों से अलग करती थी, क्योंकि खतना न किए हुए लोगों को इस्राएल की विभिन्न रीतियों से दूर रखा जाता था (निर्गमन 12:48)। यहूदी लोग अन्यजातियों के साथ, जिनका खतना नहीं हुआ होता था, मेल जोल रखना व्यवस्था के विरुद्ध समझते थे (प्रेरितों 10:28; 11:2, 3; 16:3; 21:28)।

व्यवस्था को मिटाकर यीशु ने इसे बदल डाला। इफिसियों 2:14, 15 हमें बताता है:

> क्योंकि वही हमारा मेल है, जिस ने दोनों को एक कर लिया: और अलग करने वाली दीवार को जो बीच में थी, ढा दिया। और अपने शरीर में बैर अर्थात वह व्यवस्था जिस की आज्ञाएं विधियों की रीति पर थीं, मिटा दिया, कि दोनों से अपने में एक नया मनुष्य उत्पन्न करके मेल करा दे।

व्यवस्था केवल इस्राएलियों के लिए ही थी (व्यवस्थाविवरण 4:7, 8; निर्गमन 34:27, 28, 1 राजा 8:9, 21), अन्यजातियों के लिए नहीं (भजन 147:19, 20; रोमियों 2:14)। जब तक व्यवस्था लागू रही, तब तक यहूदी और अन्यजाति एक नहीं हो सके। अपने शरीर, अर्थात अपनी मृत्यु से (कुलुस्सियों 1:22), यीशु ने व्यवस्था को एक ओर कर दिया (इफिसियों 2:14, 15) अर्थात उसने क्रूस पर व्यवस्था का अन्त कर डाला।

''विधियों का वह लेख जो हमारे नाम पर, और हमारे विरोध में था मिटा डाला'' लिखकर पौलुस उन अपराधों की बात कर रहा होगा जो क्षमा किए गए हैं (कुलुस्सियों 2:13, 14)। दूसरी ओर, पौलुस उन आदेशों की बात कर रहा होगा जो परमेश्वर ने इस्राएल को दिए और उन आदेशों की भी जिन्हें कुछ लोग मसीहियों पर थोपने की कोशिश कर रहे थे। इस विचार के लिए नीचे दिए कारणों पर ध्यान दें।

(1) कुलुस्सियों 2:13 में पौलुस ने कहा कि हमारे अपराध (बहुवचन) क्षमा कर दिए गए थे। फिर, आयत 14 में उसने जोड़ा कि ''लेख'' (यू.: *cheirographon*, एक वचन) अर्थात मूलत: हाथों से लिखा ''आदेशों'' (यू.: *dogma*) का दस्तावेज बीच से हटा लिया गया था। ''हाथों से लिखा दस्तावेज'' का क्या अर्थ है? यदि पौलुस अपराधों की बात कर रहा था, तो उसने ''उस'' के बजाय केवल ''उन'' सर्वनाम अर्थात ''उनको क्रूस पर कीलों से जड़कर सामने से हटा दिया'' क्यों नहीं लिखा?

(2) कुलुस्सियों के नाम पौलुस के मुख्य थीसिस में यीशु की उत्तमता थी, जिसमें सारी बुद्धि और ज्ञान छुपा हुआ है (कुलुस्सियों 2:3)। यीशु उत्तम है, इसलिए किसी और की

शिक्षा न दी जाए (कुलुस्सियों 2:4, 8)। कुलुस्से के मसीही विधियों के लिए यीशु के साथ मर गए थे जो यीशु की ओर से नहीं थीं, सो पौलुस ने पूछा कि वे अपने आपको ऐसे आदेशों के अधीन क्यों ला रहे हैं (यू.: *dogmatizo*, एक क्रिया जिसका अर्थ ''आदेशों को मानना'' है; कुलुस्सियों 2:20)।

(3) यीशु ने न केवल उनके अपराध क्षमा किए बल्कि उसने हाथ से लिखे उन लेखों को भी मिटा डाला जो उनके विरुद्ध थे। ये विधियां उनके लिए विरोधी थीं, जो उन्हें उस श्राप के अधीन लाती थीं (गलतियों 3:10) जिसे यीशु ने क्रूस के द्वारा मिटा दिया था (कुलुस्सियों 3:13)।

(4) इफिसियों 2:15 में पौलुस ने लिखा कि यीशु ने ''वह व्यवस्था जिसकी आज्ञाएं विधियों [यू.: *dogma*] की रीति पर थीं, मिटा दिया।'' उसके द्वारा इफिसियों की पत्री में व्यवस्था के लिए *डोगमा* शब्द का इस्तेमाल इस तथ्य के महत्व को और बढ़ा देता है (यद्यपि निर्णायक रूप से नहीं) कि वह कुलुस्से के मसीहियों में इस शब्द का इस्तेमाल इन्हीं आदेशों की बात करने के लिए कर रहा था। इफिसियों 2:1-15 और कुलुस्सियों 2:11-16 में काफी समानता पाई जाती है।

(5) यीशु ने इन आदेशों को क्रूस पर कीलों से जड़ दिया और खुलेआम प्रधानताओं पर अपनी विजय दिखाई (कुलुस्सियों 2:15)। इसलिए पौलुस ने लिखा, ''इसलिए खाने-पीने या पर्ब्ब या नए चान्द, या सब्तों के विषय में तुम्हारा कोई फैसला न करे'' (कुलुस्सियों 2:16)। मसीही लोग इन (कुलुस्सियों 2:20) और अन्य आदेशों के लिए मसीह के साथ मर चुके हैं।

यदि यह सत्य है, तो कुलुस्सियों 2:13, 14 का अर्थ यह है कि बपतिस्मे में यीशु के साथ गाड़े और जिलाए जाने के समय, आत्मिक रीति से हमारा खतना हुआ था। हमारे पाप व्यवस्था के आदेशों द्वारा नहीं, बल्कि परमेश्वर के काम में हमारे विश्वास के कारण क्षमा हुए थे। ऐसे आदेश हमारे विरुद्ध थे अर्थात वे हम पर केवल मृत्यु और दण्ड ही ला सकते थे। यीशु ने क्रूस पर कीलों से जड़ कर विधियों की इस अप्रभावकारी प्रणाली को बीच में से हटा दिया था।

कुरिन्थुस में जाने पर, पौलुस ने, ''... यह ठान लिया था, कि ... यीशु मसीह, बरन क्रूस पर चढ़ाए हुए मसीह को छोड़ और किसी बात को न जानूं'' (1 कुरिन्थियों 2:1, 2)। उसने कुरिन्थुस के मसीहियों को प्रभु की आज्ञाओं के बारे में लिखा (1 कुरिन्थियों 14:37), परन्तु उनके नाम उसके पत्र में व्यवस्था या वाचा की आज्ञाएं नहीं हैं।

## इब्रानियों की पुस्तक में व्यवस्था

पिछली आज्ञा हटा दी गई थी, क्योंकि परछाई होने के कारण, यह अपने अधीन किसी को भी लाभ देने के अयोग्य थी। इब्रानियों 7:18, 19 में कहा गया है, ''निदान, पहिली आज्ञा निर्बल; और निष्फल होने के कारण लोप हो गई। (इसलिए कि व्यवस्था ने किसी बात की सिद्धि नहीं की) और उसके स्थान पर एक ऐसी उत्तम आशा रखी गई है जिसके द्वारा हम

परमेश्वर के समीप जा सकते हैं।'' पाप के कारण हम अपूर्ण अर्थात अधूरे हैं; परन्तु यीशु हमारे जीवनों में पाप को मिटाकर वही चीज़ देता है जिसकी हमें कमी है। व्यवस्था अपने बलिदानों के साथ, किसी आराधक को सिद्ध नहीं कर सकती थी (इब्रानियों 9:9; 10:1)। परन्तु, यीशु का बलिदान पहलौठों की कलीसिया को (इब्रानियों 12:23), जो उसके द्वारा परमेश्वर के पास आती है (इब्रानियों 10:14) सदा-सदा के लिए सिद्ध कर सकता है। व्यवस्था हमें सिद्ध नहीं कर सकी, इसलिए इसे बीच से हटा दिया गया (इब्रानियों 7:18, 19)।

इस मसीही युग में हमारे लिए यीशु के द्वारा परमेश्वर का संदेश दिया गया है (इब्रानियों 1:1, 2)। उसके अनुयायियों को उन सारी आज्ञाओं को मानना सिखाया जाता है जो उसने दी हैं (मत्ती 28:20)। जिन लोगों को ये आज्ञाएं दी गई हैं और जो इन्हें मानते हैं वे वही लोग हैं जो उससे प्रेम करते हैं (यूहन्ना 14:15, 21, 23; 15:10)। मसीही लोग आज उन नियमों के अधीन नहीं हैं जो परमेश्वर ने इस्राएलियों को दिए थे।

## निष्कर्ष

व्यवस्था यहूदियों और अन्यजातियों को अलग करती थी। यीशु की मृत्यु से जुदाई की वह दीवार गिर गई और मसीही लोग व्यवस्था की मांगों और आदेशों के लिए यीशु के साथ मर गए हैं।

मसीही लोगों के लिए, व्यवस्था द्वारा उद्धार नहीं आ सकता, केवल उसी के द्वारा आ सकता है जिसने हमें अपना सम्पूर्ण बलिदान देकर व्यवस्था से छुड़ाया। हमारा विश्वास यीशु और उसकी शिक्षा में है, मूसा और उसकी व्यवस्था में नहीं।

---

पाद टिप्पणियां

[1]द न्यू टैस्टामेंट, ए न्यू ईज़ी-टू-रीड वर्ज़न (ग्रैंड रैपिड्स, मिशी.: बेकर बुक हाउस, 1978),11; कन्टेम्परेरी इंग्लिश वर्ज़न (न्यू यॉर्क: अमेरिकन बाइबल सोसायटी, 1991),7. [2]जेम्स मोन्टगोमरी बोयस एण्ड मेरिल सी. टैनी, सं., द एक्सपोज़िटर'ज़ बाइबल कमैन्ट्री, अंक 10, रोमन्स-गलेशियन्स, सा.सं. फ्रैंक ई. गेयबलेन (ग्रैंड रैपिड्स, मिशी.: ज़ौंडरवन पब्लिशिंग हाउस, 1976), 467.

# इब्रानियों की पुस्तक में वाचाएं

यीशु की मध्यस्थता वाली वाचा के सम्बन्ध में इब्रानियों की पुस्तक नीचे दी गई बातें सिखाती है:

1. यीशु इसका जामिन है (इब्रा. 7:22)।
2. यह एक उत्तम वाचा है (इब्रा. 7:22; 8:6)।
3. यीशु इसका मध्यस्थ है (इब्रा. 8:7; 9:15; 12:24)।
4. यह उत्तम प्रतिज्ञाओं के सहारे बांधी गई है (इब्रा. 8:6)।
5. यह दूसरी वाचा है (इब्रा. 8:6; 10:9)।
6. यह एक नई वाचा है (इब्रा. 8:8, 13; 9:15; 12:24)।
7. यह उस वाचा की तरह नहीं है जो परमेश्वर ने मिसर से लाते समय इस्राएलियों के साथ बांधी थी (इब्रा. 8:9)।
8. इसे बांधने के लिए लहू बहाने के साथ, मृत्यु भी आवश्यक थी (इब्रा. 9:16, 18)।
9. यह तभी मान्य और लागू हुई जब इसके बांधने वाले की मृत्यु हो गई (इब्रा. 9:17)।
10. इससे पापों की क्षमा के लिए अनुग्रह दिया गया (इब्रा. 8:12; 10:17)।
11. इस वाचा का लहू हमें शुद्ध करता है (इब्रा. 10:29; मत्ती 26:28; मरकुस 14:24; लूका 22:20; 1 कुरिन्थियों 11:25 भी देखिए)।
12. मसीही लोग इसी वाचा के पास आते हैं, उसके पास नहीं जो सीनै पर बांधी गई थी (इब्रा. 12:18-24)।
13. यह अनन्त वाचा है (इब्रा. 13:20)। शायद यह वही अनन्त वाचा है जिसकी परमेश्वर ने भविष्यवाणी की थी (यिर्मयाह 32:40; यहेजकेल 16:60; 37:26)।

इब्रानियों की पुस्तक मूसा की मध्यस्थता वाली वाचा के बारे में नीचे दी गई बातें बताती हैं:

1. नई, अर्थात दूसरी वाचा, इससे उत्तम है (इब्रा. 7:22; 8:6)।
2. दूसरी प्रतिज्ञाएं पहली से उत्तम हैं (इब्रा. 8:6)।
3. इसे पहली वाचा कहा जाता है (इब्रा. 8:7, 13; 9:1, 15, 18; 10:9)।

4. नई वाचा इसे जीर्ण कर देती है (इब्रा. 8:13)।
5. इब्रानियों की पत्री के लिखे जाने के समय यह पुरानी हो रही थी और मिटने वाली थी (इब्रा. 8:13)।
6. इसके समय किए गए अपराध यीशु की मृत्यु से क्षमा हो गए (इब्रा. 9:15)।
7. यह जानवरों के लहू से बांधी गई थी (इब्रा. 9:18-21)।
8. इसे उठा लिया गया ताकि नई वाचा नियुक्त की जा सके (इब्रा. 10:9)।

नई अर्थात दूसरी और उत्तम वाचा जिसे यीशु ने बांधा, ने उस पुरानी अर्थात पहली वाचा का स्थान ले लिया जिसकी मध्यस्थता मूसा ने की थी। पहली वाचा अब व्यवहार में नहीं है ''वह पहले को मिटा देता है, ताकि दूसरे को नियुक्त करे'' (इब्रानियों 10:9ख)।

कुछ अनुवादों में इब्रानियों 10:9 का अनुवाद ऐसे किया गया है कि इसका अर्थ यह निकले कि केवल बलिदान ही उठा लिए गए थे: ''तो वह दूसरी व्यवस्था को स्थापित करने के लिए, पहली को रद्द कर देता है'' (Easy to Read Hindi Version).

''पहली'' को बलिदानों तक सीमित करना सही नहीं है, क्योंकि इब्रानियों 8 के बाद पहली वाचा और इससे जुड़ी सेवाओं के लिए ''पहली'' इस्तेमाल हुआ है (8:7, 13; 9:1, 15, 18)। इब्रानियों की पुस्तक का सारा उद्देश्य यह दिखाना है कि जो यीशु ने हमें दिया है वह उस व्यवस्था और वाचा से उत्तम है जो परमेश्वर ने इस्राएलियों को दी थी (1:1, 2; 3:3-6; 7:19, 22; 8:6)।

मसीही होने के कारण, हम उस सीनै पर्वत के पास नहीं आए थे जो आग से चमक उठा था, जहां दस आज्ञाएं दिए जाने के समय तुरही का शब्द हुआ था (निर्गमन 19:18; इब्रानियों 12:18, 19)। हम सिय्योन पर्वत अर्थात स्वर्गीय यरूशलेम और यीशु के पास आए हैं जो नई वाचा का मध्यस्थ है (इब्रानियों 12:22-24)।

इब्रानियों 12:18-24 गलतियों 4:24-26 में दो वाचाओं की पौलुस की रूपकात्मकता से मेल खाता है, अर्थात एक आग के साथ सीनै पर्वत के चमकने (दस आज्ञाओं की बात) और स्वर्गीय यरूशलेम से जो ऊपर है, अर्थात मसीह की नई व्यवस्था से मेल खाता है। दोनों पदों में सिखाया गया है कि मसीही लोग सीनै पर्वत से मिली वाचा की संतान नहीं हैं, बल्कि वे यीशु के द्वारा प्रकट विश्वास के द्वारा परमेश्वर की संतान हैं।

2 कुरिन्थियों 3:6-14 में पौलुस ने लिखा कि पत्थर पर लिखा हुआ जो ''घटता जाता था'' (आयतें 7, 11) और जिसका ''अन्त'' हो चुका है (पद 13)। सीनै पर्वत से कही बात की ओर ध्यान करने के बजाय, हमें नई वाचा का मध्यस्थ होने के कारण (इब्रानियों 12:24) यीशु के पास आकर उसकी बात माननी चाहिए (इफिसियों 5:24)। पहली को एक तरफ कर दिया गया है; हम अब दूसरी वाचा के अधीन हैं अर्थात उस वाचा के जिसकी मध्यस्थता यीशु ने की थी।